Total No. of Printed Pages : 3 Roll No.....

PJ-102

फलित ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्त

फलितज्योतिष में डिप्लोमा/प्रमाणपत्र(डी.पी.जे./सी.पी.जे.-12/16/17)

द्वितीय प्रश्नपत्र/प्रथम सेमेस्टर-सत्र 2020

Time Allowed : 2 Hours Maximum Marks : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है। जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल कीजिए।

खण्ड-'क'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड-'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बीस (20) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (2×20=40)

1. सम्प्रति ज्योतिष शास्त्र की क्या उपयोगिता है?

2. भाव क्या है? वृहस्पति ग्रह का द्वादश भावों में लिखिए।

3. ग्रहों के नैसर्गिक एवं तात्कालिक मित्रामित्र का उल्लेख कीजिए।

4. नक्षत्र का सैद्धान्तिक विवेचन कीजिए।

5. पंचमहापुरूष योग का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

खण्ड-'ख'

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट: खण्ड-'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए दस (10) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (4×10=40)

1. ज्योतिष शास्त्र का ऐतिहासिक विवेचन कीजिए।

2. भद्रा से आप क्या समझते हैं?

3. सप्तमेश का द्वादश भावों में फल लिखिए।

4. अरिष्ट योग क्या है? उदाहरण सहित लेखन कीजिए।

5. योग किसे कहते हैं? उसका शुभाशुभ फल लिखिए।

6. ग्रहों के गुण-धर्म तथा ग्रहदृष्टि विचार का उल्लेख कीजिए।

7. सूर्य एवं चन्द्रमा से बनने वाले योगों का वर्णन कीजिए।

8. ज्योतिष शास्त्र की महत्ता पर निबन्ध लिखिए।

****